भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान

क्षेत्रीय केन्द्र, इंदौर - 452 001(मध्य प्रदेश)

कृषकों हेतु सलाह : गेहूँ फसल (दिसम्बर, 2023)

- गेहूँ के लिए सामान्यतया नत्रजन, स्फुर व पोटाश–4:2:1 के अनुपात में देना चाहिये। सीमित सिंचाई में 80:40:20, सिंचित खेती में 140:70:35 तथा देर से बुवाई में 100:50:25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर के अनुपात में उर्वरक देना चाहिये ।
- पूर्ण सिंचित खेती में नत्रज़न की आधी मात्रा तथा स्फुर व पोटाश की पूर्ण मात्रा बुवाई से पहले मिट्टी में ओरना (3–4 इंच गहरा) चाहिये। शेष बचे हुए नत्रजन की आधी–आधी मात्रा 20 दिन तथा 40 दिन बाद वाले सिंचाई के साथ देना चाहिये।
- खेत के उतने ही हिस्से में यूरिया का भुरकाव करें, जितने में उसी दिन सिंचाई दे सकें। जहाँ तक संभव हो यूरिया बराबर से फैलायें।
- गेहूँ की अगेती खेती में (मध्य क्षेत्र की काली मिट्टी तथा 3 सिंचाई की खेती में) पहली सिंचाई बुवाई के तुरंत बाद, दूसरी 35–45 दिन तथा तीसरी सिंचाई 70–80 दिन की अवस्था मे करना पर्याप्त है।
- पूर्ण सिंचित समय से बुवाई में 20–20 दिन के अन्तराल पर 4 सिंचाई करें।
- आवश्यकता से अधिक सिंचाई करने पर फसल गिर सकती है, दानों में दूधिया धब्बे आ जाते हैं तथा उपज कम हो जाती है।
- बालियाँ निकलते समय फव्वारा विधि से सिंचाई न करें अन्यथा फूल खिर जाते हैं, दानों का मुँह काला पड़ जाता है व करनाल बंट तथा कंडुवा व्याधि के प्रकोप का डर रहता है।
- अधिक सर्दी वाले दिनों में पाले से बचाव के लिए फसलों में स्प्रिंकलर के माध्यम से हल्की सिंचाई करें, थायो यूरिया की 500 ग्राम मात्रा का 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें अथवा 8 से 10 किलोग्राम सल्फर पाउडर प्रति एकड़ का भुरकाव करें अथवा घुलनशील सल्फर 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गेहूँ फसल में मुख्यतः दो तरह के खरपतवार होते है। चौडी पत्तीः बथुवा, सेंजी, दूधी, कासनी जगंली पालक, जगंली मटर, कृष्ण नील, हिरनखुरी तथा संकरी पत्तिः मोथा, जंगली जई, कांस आदि।
- किसान भाई अगर खरपतवार नाशक का उपयोग नहीं करना चाहते हैं तो डोरा, कुल्पा व हाथ से निंदाई–गुड़ाई 40 दिन से पहले दो बार करके खरपतवार खेत से निकाल सकते हैं।
- **चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार** के लिए 2,4–डी की 0.65 किलोग्राम या मैटसल्फ्यूरॉन मिथाइल की 4 ग्राम/ हेक्टेयर की दर से बुवाई के 30–35 दिन बाद, जब खरपतवार 2–4 पत्ती वाले हों, छिडकाव करें।
- **संकरी पत्ती वाले खरपतवार** के लिए क्लौडिनेफॉप प्रौपरजिल 60 ग्राम/हेक्टेयर की दर से 25–35 दिन की फसल में जब खरपतवार 2–4 पत्ती वाले हों, छिडकाव करें।
- **दोंनों तरह (चौंडी पत्तियाँ व संकरी पत्तियाँ) के खरपतवार** के लिए खरपतवार नाशक मैटसल्फ्यूरॉन मिथाइल की 4 ग्राम तथा क्लौडिनेफॉप प्रौपरजिल 60 ग्राम/हेक्टेयर की दर से मिलाकर (टैंक मिक्स) 25–35 दिन की फसल में छिड़काव करने से दोनो तरह के खरपतवार पर नियंत्रण किया जा सकता है।
- देरी से बुवाई के लिये एच.आई.1634 (पूसा अहिल्या), सी.जी.1029 (कनिष्क), जे.डब्ल्यू.1203, एच.डी. 2932 (पूसा 111), एम.पी. 3336, राज. 4238, इत्यादि प्रजातियों की बुवाई करें तथा बोवनी 31 दिसम्बर तक अवश्य कर दें।
- **सैनिक कीट (आर्मी वर्म):** इसके लारवा (सुन्डी) भूमि की सतह से पौधे के तने को काटता है। ये प्रायः दिन में छुपे रहते हैं तथा रात होने पर निकलतें है तथा पौधे की जड़े काट देते हैं। फलस्वरूप फसल सूखना प्रारम्भ हो जाती है। इसकी रोकथाम हेतु1.5 प्रतिशत क्यूनालफॉस 375 ग्रम सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर सुबह या शाम के समय प्रयोग करें और बाद में सिंचाई कर दें।

जड़ माहू कीट (रूट एफिड) **सैनिक कीट (आर्मी वर्म)**

- **माहू** का प्रकोप गेहूँ फसल में उपरी भाग (तना व पत्तों) पर होने की दशा में इमिडाक्लोप्रिड 250 मिली ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पानी मे घोल बनाकर छिडकाव करें।
- **जड़ माहू (रूट एफिड)** गेहूँ के पौधे को जड़ से रस चुसकर पौधों को सुखा देते हैं। जड़ माहू के नियंत्रण के लिए बीज उपचार गाऊचें रसायन से 3 ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज की दर से उपचारित करें अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस एल की 250 मिली ली या थाइमैथौक्सैम की 200 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 300–400 लीटर पानी मे घोल बनाकर छिडकाव करें।

भूरा गेरूआ **काला गेरूआ** **कंडवा (लूज स्मट)**

- **गेरूआ :** शरबती–चन्दौसी गेंहूँ के साथ मालवी गेहूँ की खेती करने से गेरुआ रोग की सम्भावना कम हो जाती है। सामान्यतः चन्दौसी किस्में भूरा गेरूआ तथा मालवी गेहूँ में काला गेरूआ आता है। गेरूआ रोग से जल्दी ग्रस्त होने वाली पुरानी जातियाँ की खेती न करें तथा विश्वसनीय स्थानों से ही शुद्ध बीज का चयन करें। गेरूआ रोग से प्रतिरोधी नई प्राजातियों की खेती करें। अधिक प्राकोप होने पर प्रोपीकोनाजोल (0.1 प्रतिशत) 1 एम.एल./ली., या टेबुकोनेजाल (0.1 प्रतिशत) 1 एम.एल./ली दवा का छिड़काव करें।
- **कंडवा रोग (लूज स्मट):** यह बीज जनित फफूँदी जनित रोग है। इस रोग में बालियों में बीज के स्थान पर काला चूर्ण बन जाता है। तथा पुरानी प्रजातीयों में भारत के सभी हिस्सों में देखा जा सकता है। इसके उपचार हेतु रोग प्रभावित पौधों को उखाड़कर सावधानीपूर्वक थैलियों में बंद कर मिट्टी में दबाना चाहिए अथवा जला देना चाहिए, क्योंकि यह रोग हवा से फैलता है। स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज का उपयोग करें तथा रोग रोधी किस्मों की ही बुवाई करें। इसके लिए बीज को ट्राइकोडरमा विरीडी 4 ग्रा./कि. बीज या कार्बोक्सिन (विटावैक्स 75 डब्ल्यू. पी.) 1.25 ग्रा/कि. बीज या टेबुकोनेजाल (रैक्सिल 2 डी. एस.) 1.0 ग्रा./कि. बीज के हिसाब से बीज को उपचारित करके ही उपयोग करें।

- **चूहों** के नियन्त्रण के लिए 3–4 ग्राम जिंक फॉस्फाईड को एक किलोग्राम आटा, थोड़ा सा गुड़ व तेल मिलाकर छोटी–छोटी गोली बना लें तथा उनको चूहों के बिलों के पास रखें। पूर्व में 2–3 दिन तक बिना दवा की आटा, गुड़ व तेल की गोलियाँ बिलों में डालें। तथा उन्हे इनके खाने की आदत हो जाय तब दवा वाली गोली डालें। यह कार्य शाम के समय करें तथा मरे हुए चुहों को सुबह–सुबह निकालकर गडढे में दबा दें या जला दें।
- खेत में गेहूँ के पौधें के सूखने अथवा पीले पड़ने पर जो कि किसी कीट, बीमारी अथवा पोषक तत्व की कमी से हो सकता है, तुरन्त विशेषज्ञ की सलाह लेकर उसका शीघ्र उपचार करें।